श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ अंतर्गत

समाधितंत्र अध्ययन वर्ष

सौजन्य : मातुश्री ललिताबेन व्रजलाल शाह परिवार, जलगांव

प्रश्नपत्र क्रमांक - ७ (कुल मार्कस–५०)

अभ्यासक्रम : **समाधितंत्र : गाथा ७६ से ८५**

परीक्षार्थीका नाम: ..... उम्र वर्ष : .....

मंडलका नाम : ..... गाँवका नाम : .....

फोन नंबर : ..... ता. १५-१-२०२१

सूचना : (१) प्रश्नोंके उत्तर समाधितंत्रके आधार पर देने होंगे।

प्रश्न–१ : कौंसमें दिये गये विकल्पमेंसे सही विकल्पसे रिक्तस्थानकी पूर्ति कीजिये। १०

(१) ..... वह मुक्तिकी प्रथम सीढ़ी है, उसके बिना मुक्ति कदापि नहीं हो सकती। (स्वाध्याय, भेदविज्ञान, ध्यान)

(२) सम्यक्त्व बिना शुभभावोंको व्यवहारसे ..... नाम प्राप्त नहीं होता है। (चारित्र, श्रद्धा, रत्नत्रय)

(३) अंतरात्मा शरीरके विनाशको आत्मासे भिन्न मानता है और मृत्युके अवसरको एक वस्त्र छोड़कर अन्य वस्त्रको ग्रहण करनेके समान समझकर स्वयंको ..... मानता है। (भयभीत, निःशंक, निर्भय)

(४) शुभाशुभभाव दोनों ..... परिणतिसे उत्पन्न होनेसे कर्मबंध और संसारका कारण है। (विभाव, स्वभाव, कषाय)

(५) मैं चैतन्यमात्र स्वभाव हूँ ऐसे स्वभावकी एकाग्रताके जोरसे ..... का अभाव हो जाता है। (कषाय, पापभाव, विकल्प)

प्रश्न–२ : नीचे दिये गये प्रश्नोंके एक ही शब्दमें उत्तर दिजीये। १०

(१) ज्ञानी शुभभावको उपादेय मानकर संतुष्ट नहीं होता लेकिन किसके लिये उद्यमवंत रहते है ? .....

(२) क्षयोपशमरूप ज्ञान एक कालमें एक साथ कितने ज्ञेयको जान सकता हैं ? .....

(३) आत्मा शरीरसे भिन्न है ऐसा जानने पर भी उसका भावभासन न हो तो क्या कार्यकारी नहीं है ? .....

(४) सम्यग्दृष्टिको स्वरूपके ग्रहण और परके त्यागकी विधि द्वारा उनको नियमसे ज्ञानके साथ क्या होता है ?.....

(५) भेदविज्ञानकी दृढ़ भावनासे अंतरात्मा शरीरादि प्रति कैसे भावसे प्रवर्तते है ? .....

प्रश्न–३ : नीचे दिये गये प्रश्नोंके उत्तर 'हा' अथवा 'नहीं'में दिजीये। १०

(१) देहादिमें आत्मबुद्धिवाला पश्चातके भवमें मेरा जन्म नीचगतिमें होगा ऐसा मानकर मरणसे भयभीत होता है। .....

(२) अव्रतभाव और व्रतभावोंका त्याग करनेसे सम्यग्दर्शनकी प्राप्ति होती है। .....

(३) सम्यग्दृष्टि शुद्धोपयोगरूप न परिणमित हो तबतक अशुद्धभावसे बचने शुभभावमें हेयबुद्धिसे वर्तता है। .....

(४) अशुभ विकल्प संसारका कारण है और शुभ विकल्प मोक्षका कारण है। .....

(५) उत्प्रेक्षाजाल आत्माके दुःखका कारण है। .....

प्रश्न : ४ नीचे दिये गये प्रश्नोंके उत्तर शोर्टमें दिजीये। १०

(१) शरीरादिसे आत्मा भिन्न है यह बात गुरुमुखसे सुनने पर भी जीव मुक्तिके लायक क्यों नहीं बनता है ?

(२) भेदविज्ञान मुक्तिका प्रथम सोपान किस प्रकारसे है ?

(३) पुण्य और पाप दोनों प्रकारके भाव बंधके कारण किसलिये है ?

(४) बहिरात्मा मृत्युसे क्यों डरता है ?

(५) जो अंतर्जल्प विकल्पोंकी जालमें उलझा रहता है उसे सुखमय वीतरागपदकी प्राप्ति क्यों नहीं होती ?

प्रश्न : ५ नीचे दिये गये कोई भी एक विषय पर निबंध लिखें । **१०**

(१) सम्यग्दृष्टिको जगत उन्मत्त और काष्ठ-पाषाणवत् भासित होता है इस सम्बन्धमें लिखें ।
(२) अंतरात्माको किस प्रकारकी भावना होती है उस सम्बन्धित समझाईये ।
(३) व्रत और अव्रत दोनों भाव हेय किस प्रकार है उस सम्बन्धित समझाईये ।

नोंध : कृपया प्रश्नपत्र–७ के उत्तरपत्र ता. १५-३-२०२१ तक सोनगढ़ पहुँचे इस प्रकारसे भेजे ।